लालिबेला की सर्वश्रेष्ठ मधुमक्खी पालक

अफ्रीका की कहानी

क्रिस्टीना केसलर

चित्र: लियोनार्ड जेनकिंस

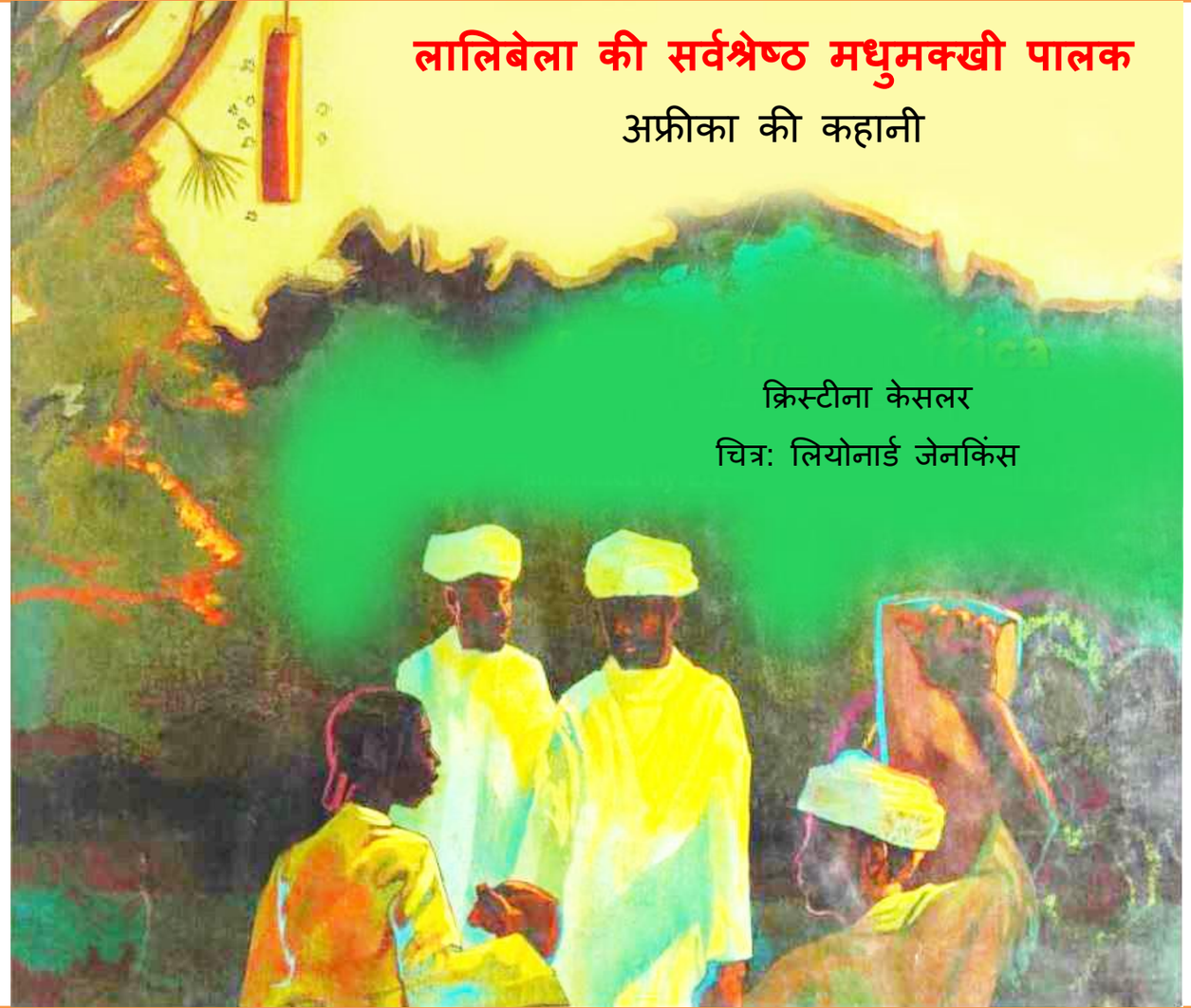

इथियोपिया के पहाड़ों में, अल्माज़ नाम की एक लड़की ने प्रतिज्ञा की कि एक दिन उसका शहद देश में सबसे अच्छा होगा. लेकिन दूसरे मधुमक्खी पालक उस पर हँसे और उन्होंने कहा कि शहद पालन पुरुषों का काम था. अल्माज़ ने उन्हें गलत साबित करने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल किया.

आश्चर्यजनक चित्रों के साथ इस उत्साही पाठ में, एक लड़की दिखाती है कि दिमाग - न कि हट्टा-कट्टा शरीर उसके सपने को सच करने की कुंजी है.

लालिबेला की सर्वश्रेष्ठ मधुमक्खी पालक

अफ्रीका की कहानी

क्रिस्टीना केसलर

चित्र: लियोनार्ड जेनकिंस

बहुत पहले, इथियोपिया की ऊंची पहाड़ियों में, जहां बैंगनी छाया घाटियों को ढंकती थी और धुंध पहाड़ियों को अपनी गले लगाती थी, वहां पर मधुमक्खियां लालिबेला में आईं.

कुछ लोगों ने कहा कि वे एक नए राजा के जन्म की घोषणा करने आई थीं, जबकि अन्य लोगों ने केवल अपने शहद के बारे में सोचा - मीठा, गाढ़ा और सुनहरा.

जैसे-जैसे सदियां बीतती गईं और यह खबर फैली, वैसे-वैसे दूर-दूर के ग्रामीण उस मीठे अमृत को खरीदने के लिए वहाँ उमड़ पर पड़े.

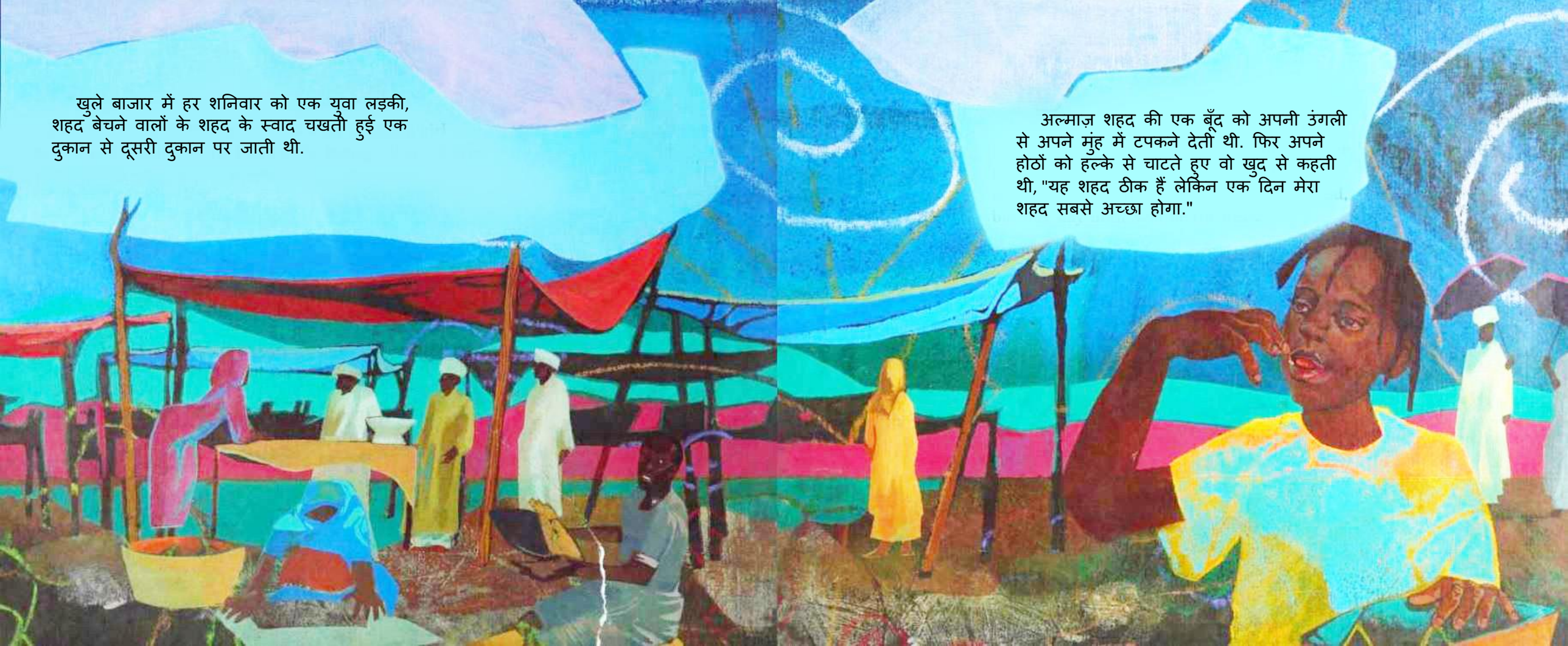

खुले बाजार में हर शनिवार को एक युवा लड़की, शहद बेचने वालों के शहद के स्वाद चखती हुई एक दुकान से दूसरी दुकान पर जाती थी.

अल्माज़ शहद की एक बूँद को अपनी उंगली से अपने मुंह में टपकने देती थी. फिर अपने होठों को हल्के से चाटते हुए वो खुद से कहती थी, "यह शहद ठीक हैं लेकिन एक दिन मेरा शहद सबसे अच्छा होगा."

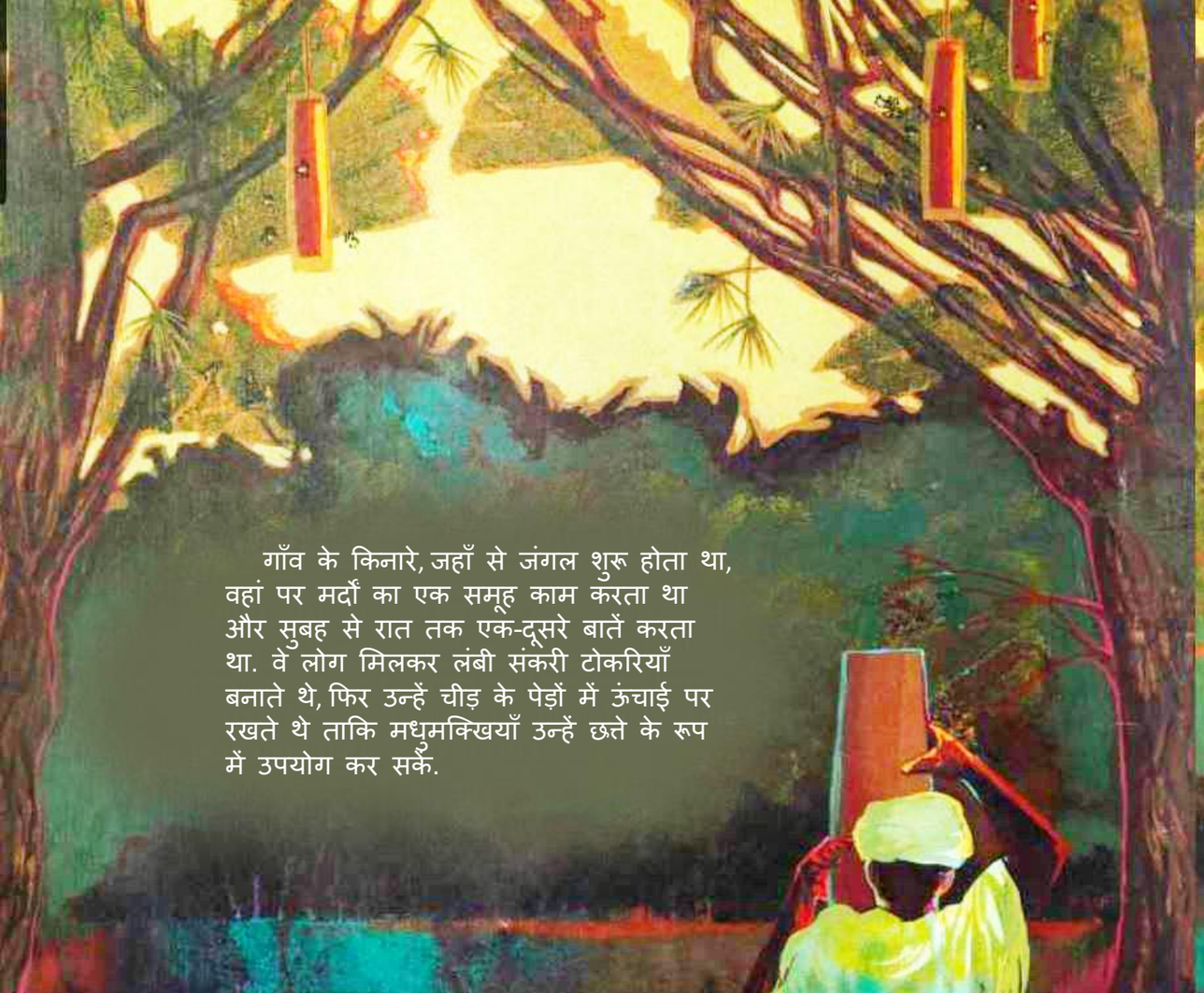

गाँव के किनारे, जहाँ से जंगल शुरू होता था, वहां पर मर्दों का एक समूह काम करता था और सुबह से रात तक एक-दूसरे बातें करता था. वे लोग मिलकर लंबी संकरी टोकरियाँ बनाते थे, फिर उन्हें चीड़ के पेड़ों में ऊंचाई पर रखते थे ताकि मधुमक्खियाँ उन्हें छत्ते के रूप में उपयोग कर सकें.

एक दिन अल्माज़ उनसे मिलने गई. "मैं भी मधुमक्खियां पालना चाहती हूँ," उसने कहा. "मैं लालिबेला में सबसे अच्छा शहद बनाना चाहती हूं."

उसकी बात सुनकर वे लोग हँसे, और सबसे बूढ़े आदमी ने कहा, "देखो, मधुमक्खियां पालना, पुरुषों का काम है. छोटी लड़की तुम जाओ और अपनी माँ से खाना बनाना, सफाई करना और जलाऊ लकड़ी इकट्ठी करना सीखो. तुम्हारे पास करने को बहुत काम होगा, तुम मधुमक्खियों को भूल जाओ."

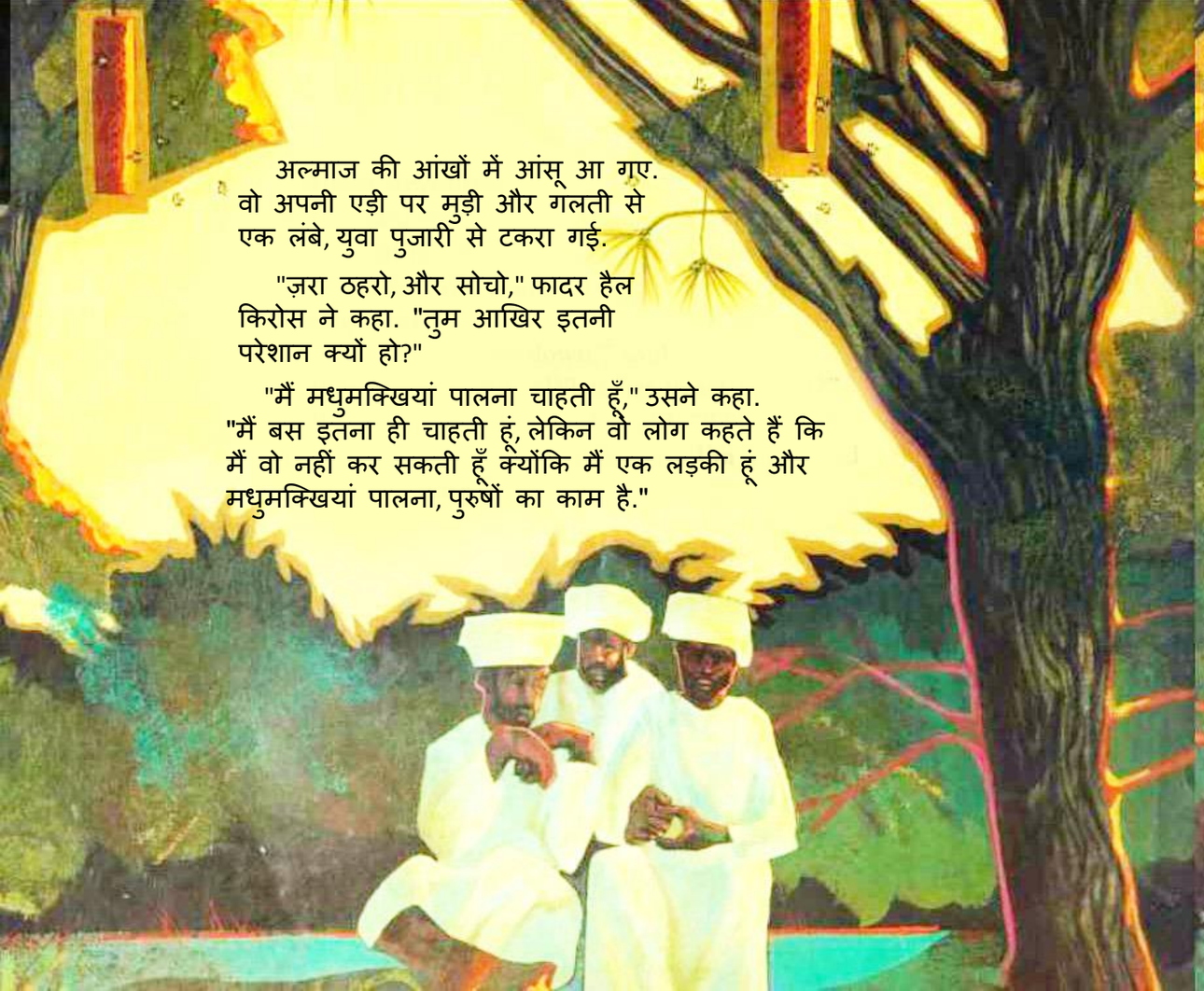

अल्माज की आंखों में आंसू आ गए. वो अपनी एड़ी पर मुड़ी और गलती से एक लंबे, युवा पुजारी से टकरा गई.

"ज़रा ठहरो, और सोचो," फादर हैल किरोस ने कहा. "तुम आखिर इतनी परेशान क्यों हो?"

"मैं मधुमक्खियां पालना चाहती हूँ," उसने कहा. "मैं बस इतना ही चाहती हूं, लेकिन वो लोग कहते हैं कि मैं वो नहीं कर सकती हूँ क्योंकि मैं एक लड़की हूं और मधुमक्खियां पालना, पुरुषों का काम है."

पुजारी लड़की की आँखों में देखने के लिए नीचे को झुका और उसने कहा, "मधुमक्खियाँ पालो, प्रिय लड़की, और दुनिया का सबसे मीठा शहद बनाओ. उसके लिए आदमी, औरत, लड़की, लड़का होना महत्वपूर्ण नहीं है. इसलिए, तुम मधुमक्खियों को ज़रूर पालो."

फिर अल्माज पेड़ के नीचे पुरुषों के समूह की ओर मुड़ी. कूल्हों पर हाथ रखकर उसने कहा, "क्या आपने फादर हैली किरोस को सुना? वह कहते हैं कि मैं मधुमक्खियां पाल सकती हूं."

"ठीक है," एक उदास बूढ़े आदमी ने कहा. फिर उसने ऊपर की ओर इशारा किया. "अच्छा तो फिर उस पेड़ पर चढ़ो और छत्ते को नीचे लाओ."

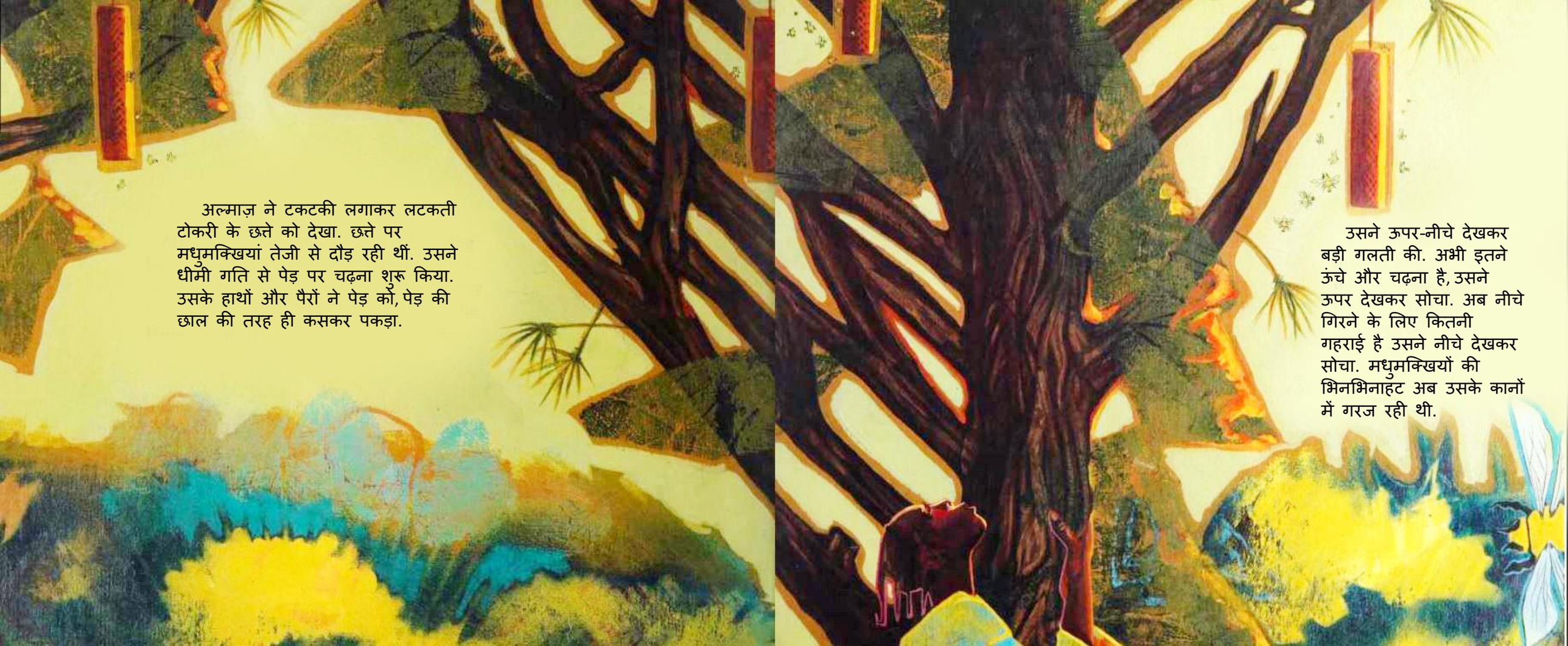

अल्माज़ ने टकटकी लगाकर लटकती टोकरी के छत्ते को देखा. छत्ते पर मधुमक्खियां तेजी से दौड़ रही थीं. उसने धीमी गति से पेड़ पर चढ़ना शुरू किया. उसके हाथों और पैरों ने पेड़ को, पेड़ की छाल की तरह ही कसकर पकड़ा.

उसने ऊपर-नीचे देखकर बड़ी गलती की. अभी इतने ऊंचे और चढ़ना है, उसने ऊपर देखकर सोचा. अब नीचे गिरने के लिए कितनी गहराई है उसने नीचे देखकर सोचा. मधुमक्खियों की भिनभिनाहट अब उसके कानों में गरज रही थी.

उसके नीचे उतरते ही पुरुष हंस पड़े. "लगता है अब तुम्हारी फुस्सी निकल गई? अगर तुम तक पेड़ पर नहीं चढ़ सकती हो, तो फिर तुम भला मधुमक्खियां कैसे पालोगी. सुनो, तुम घर जाओ और महिलाओं के काम सीखो." उसके बाद मर्दों ने एक-दूसरे के कंधों को थपथपाया जैसे कि उन्होंने कोई महान पुरुस्कार जीता हो.

उसके बाद महीनों तक जब भी अल्माज़ उनके पेड़ों के पास से गुज़रती, वो आदमी उसपर हँसते थे और एक दूसरे से कहते थे, "लगता है, उसने अपना सबक सीख लिया है."

लेकिन वे लोग अल्माज को नहीं जानते थे.

तीन पूरनमासियों के बाद शनिवार की सुबह बाजार में फिर से अल्माज प्रकट हुई. खुशी से उसने एक बेदाग सफेद कपड़ा ज़मीन पर बिछाया और उसके किनारों को सावधानी से सीधा किया.

और फिर गर्व के साथ उसने अपने डिब्बे में से छत्ते का एक चमकीला टुकड़ा उठाया. सोने के हीरों की तरह शहद की बूंदें धूप में चमकने लगीं.

उस शनिवार और आने वाले आठ शनिवारों तक लोगों ने उसके स्टॉल पर भयंकर भीड़ लगाई. मर्दों ने तेज, झाग वाली बियर बनाने के लिए उसका शहद खरीदा. महिलाओं ने उसे "जेनफ़ो" नाम के दलिए में डालने के लिए खरीदा जिसे वो अपने परिवार के लिए सुबह को नाश्ते में बनाती थीं.

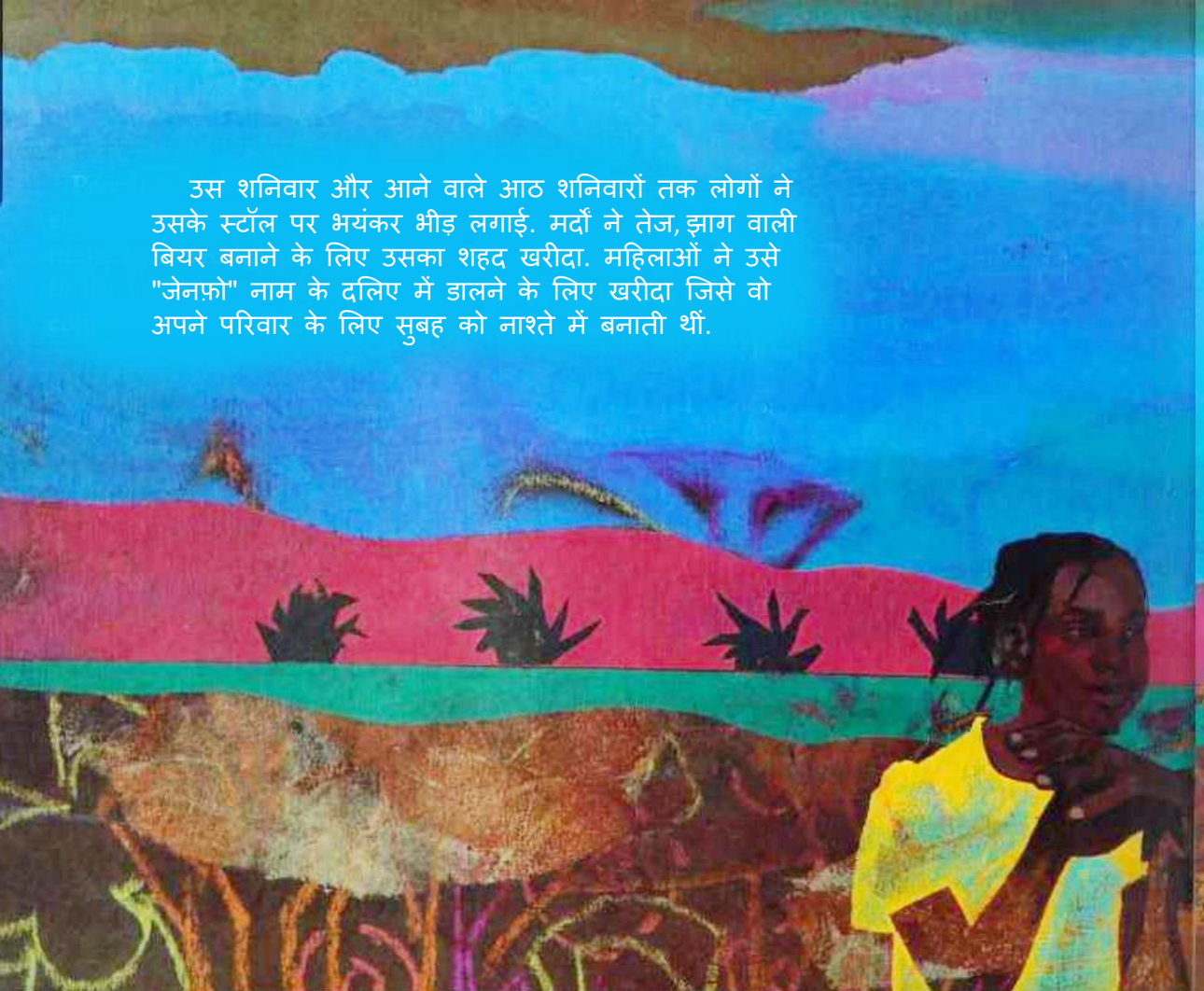

एक शनिवार को जब अल्माज बाज़ार नहीं पहुंची तो लोग काफी परेशान हुए. वो अगले, और उसके अगले और तीसरे शनिवार को भी नहीं आई. तब फादर हैले किरोस ने निराश ग्राहकों से कहा, "मैं आज अल्माज से जाकर मिलूंगा."

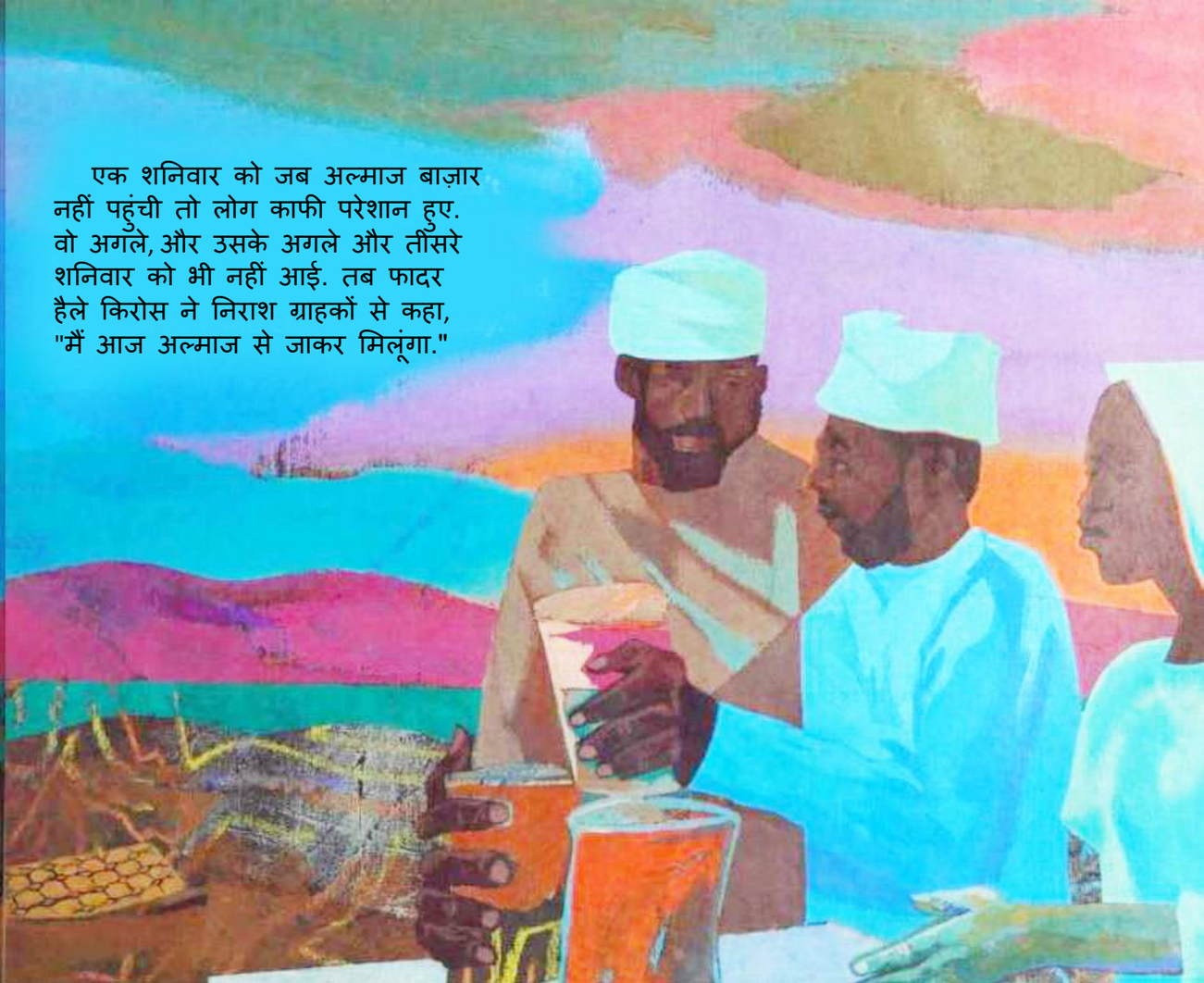

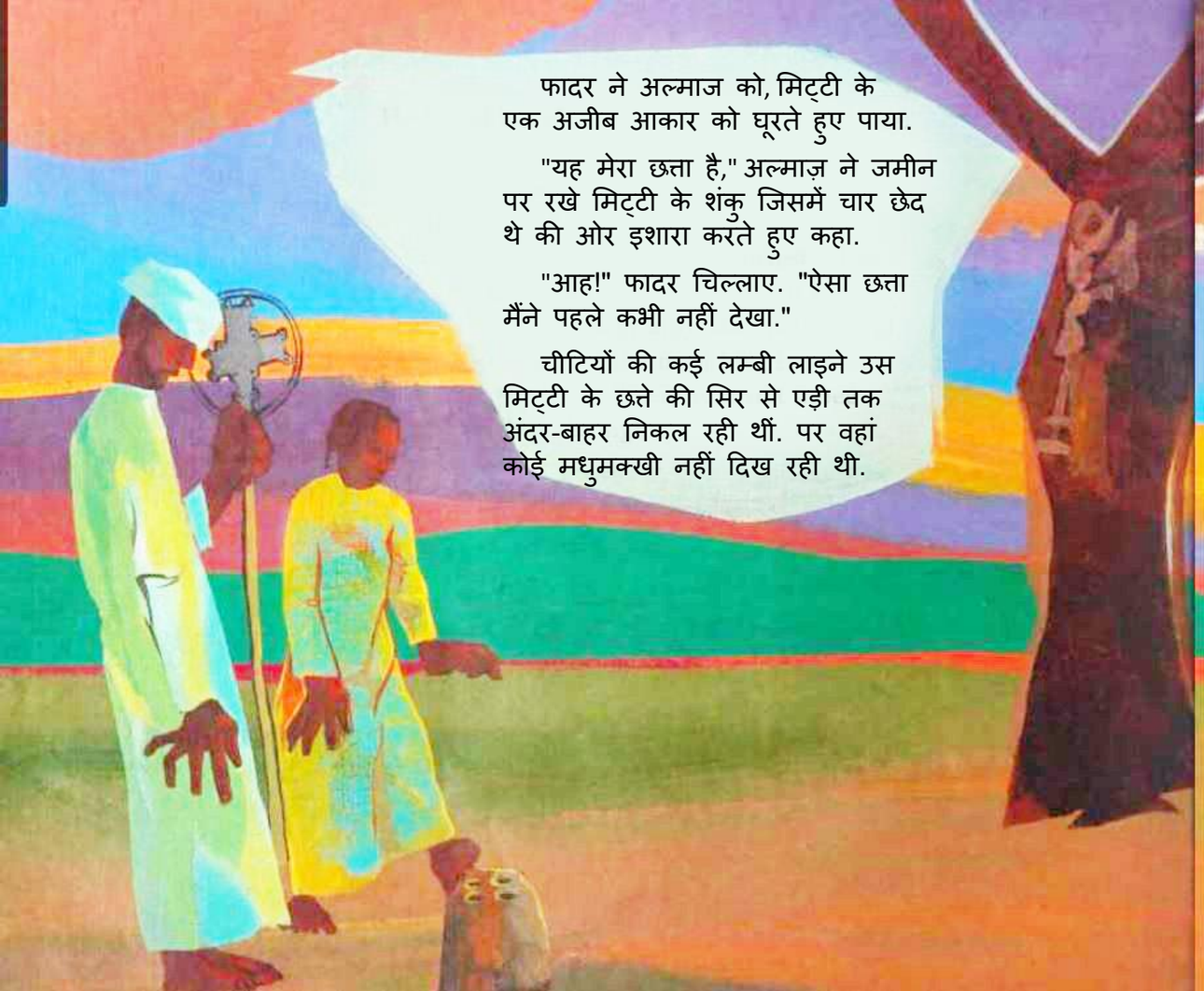

फादर ने अल्माज को, मिट्टी के एक अजीब आकार को घूरते हुए पाया.

"यह मेरा छत्ता है," अल्माज़ ने जमीन पर रखे मिट्टी के शंकु जिसमें चार छेद थे की ओर इशारा करते हुए कहा.

"आह!" फादर चिल्लाए. "ऐसा छत्ता मैंने पहले कभी नहीं देखा."

चीटियों की कई लम्बी लाइने उस मिट्टी के छत्ते की सिर से एड़ी तक अंदर-बाहर निकल रही थीं. पर वहां कोई मधुमक्खी नहीं दिख रही थी.

अल्माज़ ने अपने पैर के अंगूठे से छत्ते को थपथपाते हुए कहा, "जब तक चींटियाँ नहीं आईं थीं तब तक सब काम ठीक-ठाक चल रहा था."

"तुम उसे ठीक करने का कोई तरीका ज़रूर खोज लोगी." फादर हैली किरोस ने कहा. "तुमने जो किया है वो बहुत अच्छा है, और सभी महान उपलब्धियों के लिए कठिन प्रयास की आवश्यकता होती है. किसे पता, तुम्हारी समस्या का उत्तर कुछ बहुत ही सरल हो."

एक मजदूर मधुमक्खी की तरह अल्माज ग्यारह दिनों तक व्यस्त रही. सबसे पहले, उसने छत्ते के चारों ओर एक खाई खोदी, लेकिन पानी ने जमीन में कीचड़ पैदा कर दी.

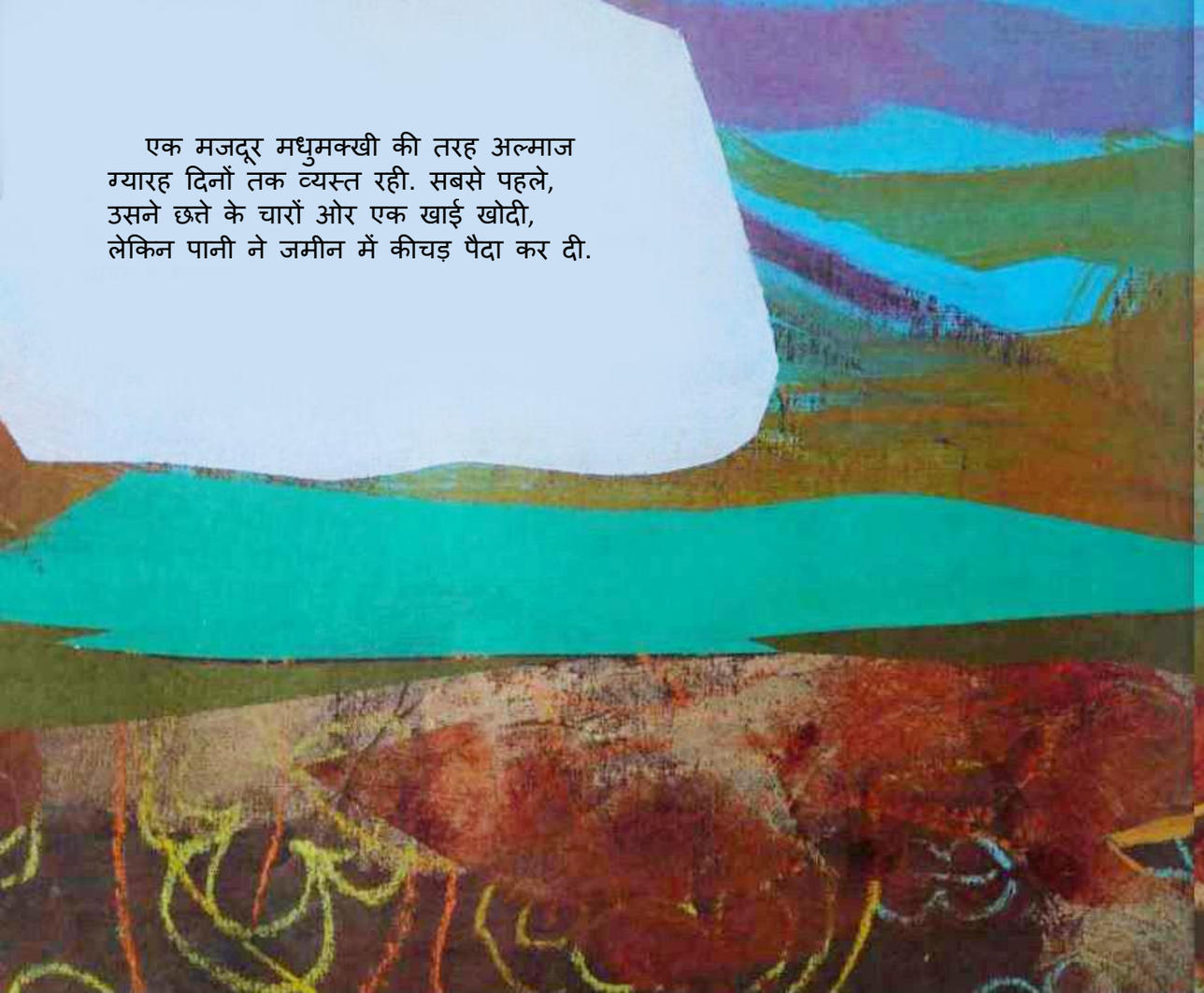

उसके बाद, उसने छत्ते को घंटी की तरह लटकाने की कोशिश की, लेकिन छत्ता बहुत भारी था.

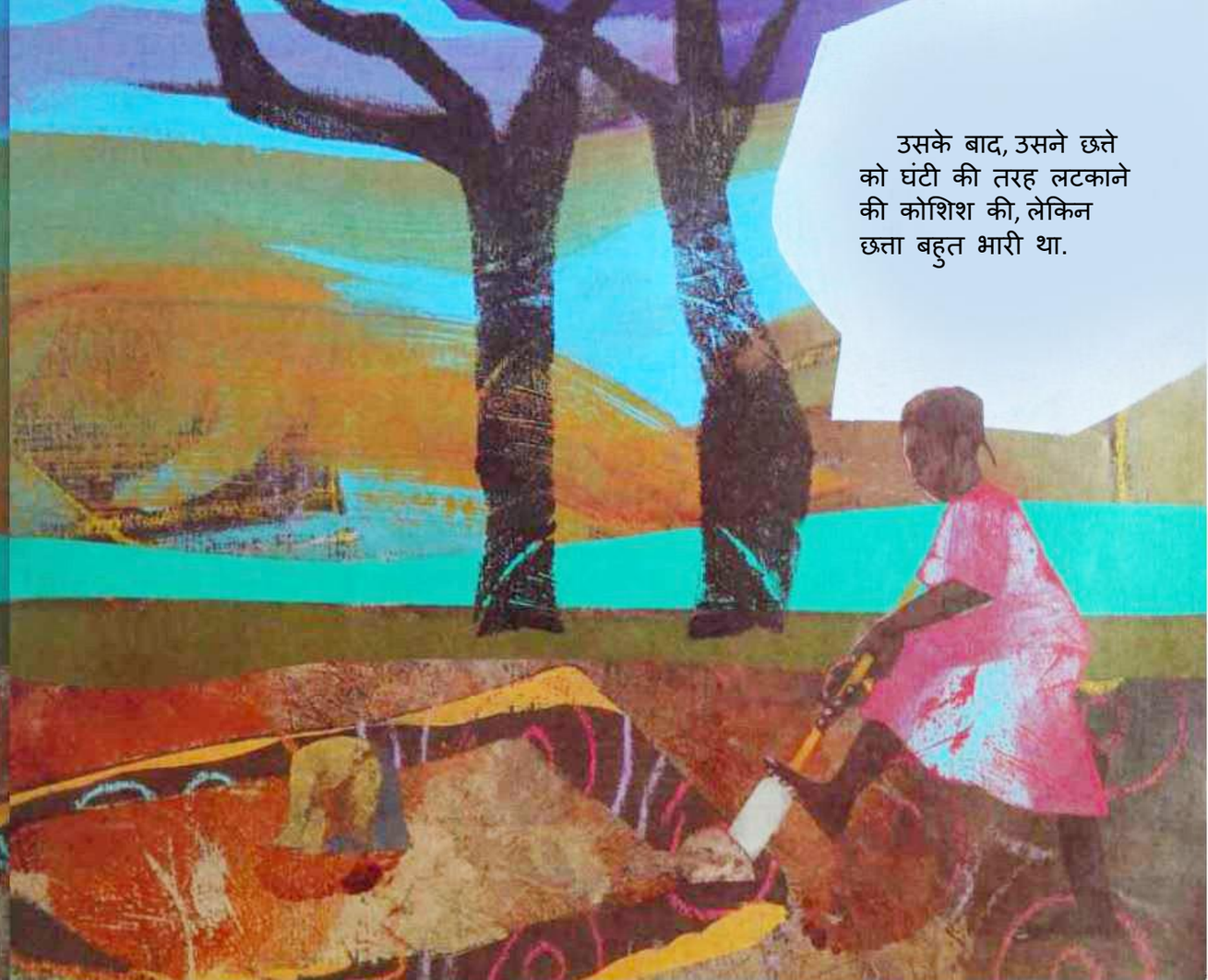

फिर एक सुबह जब अल्माज़ गाँव के नल पर कपड़े धो रही थी तब उसके भाई ने उसे सही उत्तर सुझाया. वो अपना पसंदीदा खिलौना खींचता हुआ वहां से गुजर रहा था. जमीन पर उसके पीछे एक तार से जुड़ा टमाटर का पुराना डिब्बा था जो पानी से भरा था. "मैं भी यही करूँगी," अल्माज़ ने किसी और से नहीं बल्कि खुद से कहा.

दो दिनों तक पूरे परिवार ने सिर्फ पीटने, काटने और ठोकापीटी की आवाजें सुनीं.

"उसे अकेला छोड़ दो," उसकी माँ ने कहा, "क्योंकि लगता है उसे अपना उत्तर मिल गया है."

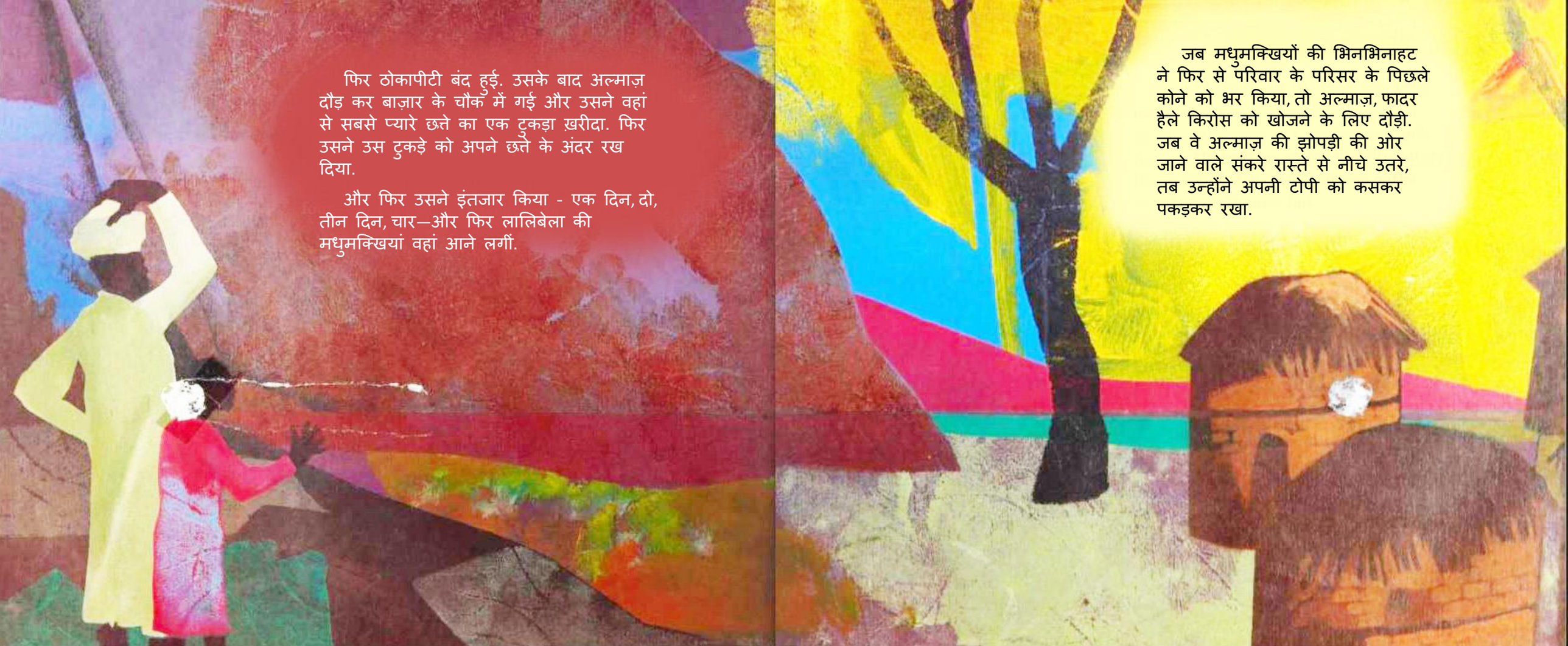

फिर ठोकापीटी बंद हुई. उसके बाद अल्माज़ दौड़ कर बाज़ार के चौक में गई और उसने वहां से सबसे प्यारे छत्ते का एक टुकड़ा ख़रीदा. फिर उसने उस टुकड़े को अपने छत्ते के अंदर रख दिया.

और फिर उसने इंतजार किया - एक दिन, दो, तीन दिन, चार—और फिर लालिबेला की मधुमक्खियां वहां आने लगीं.

जब मधुमक्खियों की भिनभिनाहट ने फिर से परिवार के परिसर के पिछले कोने को भर किया, तो अल्माज़, फादर हैले किरोस को खोजने के लिए दौड़ी. जब वे अल्माज़ की झोपड़ी की ओर जाने वाले संकरे रास्ते से नीचे उतरे, तब उन्होंने अपनी टोपी को कसकर पकड़कर रखा.

वे छत्ते के चारों ओर घूमे. अब छत्ता जमीन से थोड़ी झुकी हुई एक मेज पर रखा था.

"बहुत चतुर," फादर ने कहा, "और बहुत सरल भी!" फिर वो उसे करीब से देखने के लिए नीचे बैठ गए.

अल्माज़, फादर की बगल में ही झुककर बैठ गई. अल्माज़ ने कहा, "यह इसलिए काम करता है क्योंकि चींटियाँ तैर नहीं सकतीं हैं." मेज़ के चारों पैर एक-एक पुराने टमाटर पेस्ट के डिब्बे में खड़े थे जिनमें पानी भरा था. और ऊपर छत्ते पर, मधुमक्खियां गुनगुना रही थीं.

फिर अल्माज़ ने धीरे से ढक्कन को ऊपर उठाया. स्थिर हाथ और साफ दिल के साथ - डंक न लगने के अपनी तरकीब के साथ, उसने छत्ते का एक टुकड़ा उठाया. जब उसने छत्ता पुजारी को दिखाया तो मधुमक्खियां अल्माज़ के हाथ के चारों ओर भिनभिना रही थीं.

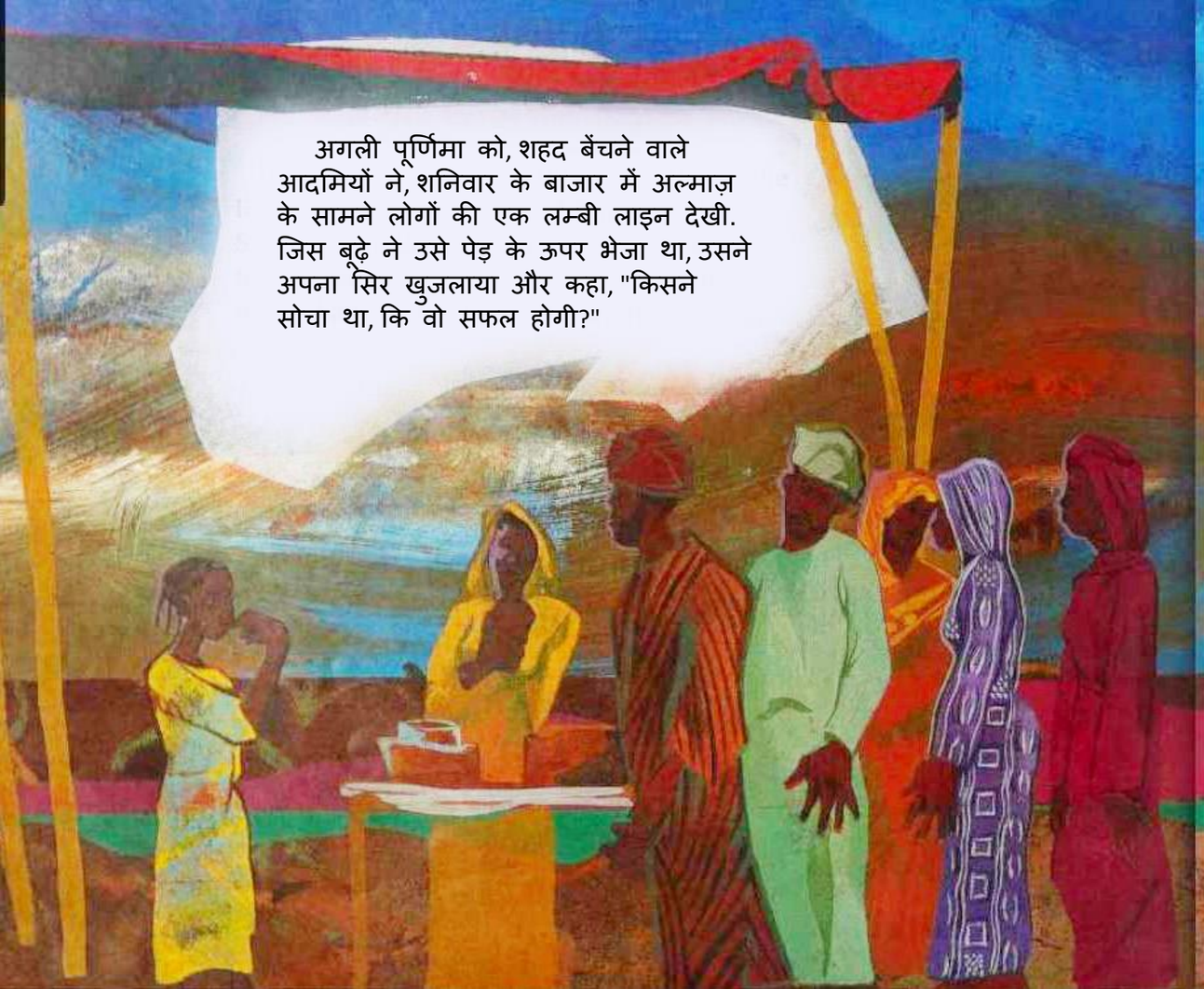
अगली पूर्णिमा को, शहद बेंचने वाले आदमियों ने, शनिवार के बाजार में अल्माज़ के सामने लोगों की एक लम्बी लाइन देखी. जिस बूढ़े ने उसे पेड़ के ऊपर भेजा था, उसने अपना सिर खुजलाया और कहा, "किसने सोचा था, कि वो सफल होगी?"

वो बूढ़ा भीड़ में से होकर ठीक अल्माज़ के सामने पहुंचा. भीड़ को चुप कराने के लिए उसने अपना गला साफ करते हुए कहा, "तुम्हारा वापस स्वागत है, अल्माज़ - लालिबेला की सबसे अच्छी मधुमक्खी पालक."

"बहुत-बहुत शुक्रिया," अल्माज़ ने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा, फिर उसने अपने मुंह में सुनहरे शहद की बूँदें टपकने दीं. "जिंदगी बड़ी मीठी है," उसने एक चिपचिपी मुस्कान के साथ कहा.

लेखक का नोट

लालिबेला की किंवदंती

1181 में रोहा, इथियोपिया के में एक बच्चे का जन्म हुआ था. उसके बड़े भाई हरबे का, राजा बनना तय था, जब तक कि कोई रहस्यमयी बात नहीं हुई.

किंवदंती के अनुसार एक दिन उसकी माँ ने बच्चे को अपने पालने में खुशी से लेटे हुए देखा. पालना मधुमक्खियों के घने झुंड से घिरा हुआ था. पुराने प्राचीन इथियोपियाई विश्वासों को याद करते हुए कि जानवर, किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के आगमन की भविष्यवाणी कर सकते हैं उसकी माँ चिल्लाई, "मधुमक्खियां जानती हैं कि यह बच्चा ज़रूर राजा बनेगा." इसलिए उन्होंने उसका नाम लालिबेला रखा. जिसका अर्थ होता है "मधुमक्खी उसकी महानता और प्रभुता को पहचानती हैं."

राजा लालिबेला ने कई वर्षों तक शासन किया, और आज आगंतुक उनके नाम पर रखे गए शहर में पत्थर के बने अविश्वसनीय चर्चों को देखने के लिए आते हैं. लालिबेला के चर्चों को अक्सर दुनिया का आठवां आश्चर्य कहा जाता है. यह एक रहस्य है कि पहाड़ के चट्टान से इतनी विशाल, अखंड संरचनाएं कैसे उकेरी गईं. एक अनुमान के अनुसार कि इन चर्चों की खुदाई के लिए लगभग चालीस हजार लोगों ने काम किया होगा. ऐसा भी माना जाता है कि स्वर्गदूतों की मदद से एक ही दिन में एक चर्च की खुदाई की गई थी.

यह कहानी आधुनिक समय के लालिबेला पर आधारित है, जो पांच हजार फीट से अधिक ऊंचे, टेढ़े-मेढ़े पहाड़ों पर स्थित है. शहद उद्योग अभी भी गांव में बहुत सक्रिय है. रूढ़िवादी इथियोपियाई अपने जीवनकाल में कम-से-कम एक बार लालिबेला के चर्चों में दर्शन के लिए ज़रूर जाते हैं. वहां आने वाले मेहमान देश में सबसे मीठा माने जाने वाले शहद का एक जग अपने साथ वापिस ज़रूर लेकर जाते हैं.